REACH Lilly MDR-TB Partnership

Media Fellowship Programme

2010-11 FELLOW: SKAND VIVEK

***Skand Vivek** is a journalist based in Madhya Pradesh and works with the Hindu daily Rajasthan Patrika (Indore edition). He focuses primarily on child rights, tobbaco & other health related issues. He has been a fellow of the National Media Fellowship of the National Foundation for India.*

एचआईवी-टीबी के बाद भी जी रहे हैं आम जीवन

जिंदगी यहीं खत्म नहीं

स्कंद विवेक @ इंदौर

जब मुझे पता चला कि मैं एचआईवी पॉजिटिव हूं, तो मुझे लगा कि जैसे मेरा अंत आ गया है। इस पर भी सितम यह हुआ कि जांच में टीबी भी निकला। छह महीने तक दवा चली और टीबी ठीक हो गया। करीब छह महीने बाद फिर से टीबी हो गया। इस बार यह पहले से भी अधिक खतरनाक था। मुझे लगातार अस्पताल में ही रहना पड़ा। दिन भर में दवा की दस से अधिक डोज लेनी पड़ती थी, कभी-कभी मन में आता था

अपनी दवाईयां लेता रहूं, अच्छा भोजन करूं, सफाई से रहूं और तनाव न पालूं। ये कहानी है बेटमा निवासी सुरेश (परिवर्तित नाम) की। जिनकी पत्नी अब भी उनके

अनुसार, टीबी के इलाज के दौरान मुझे बहुत तकलीफ हुई, लेकिन मैंने हिम्मत नहीं हारी। दवा लेने में कोई लापरवाही नहीं की। अब मुझे टीबी नहीं है, जबकि एचआईवी के साथ मैंने जीने की आदत डाल ली है। मुझे पता है कि सिर्फ दो खुराक दिन भर में लेनी है, इतना तो एक बुखार के मरीज को भी लेना पड़ता है। नावेद का एआरटी लेते 6 साल हो गए हैं।

एचआईवी मरीजों पर काम करने वाली संस्था विश्वास की काउंसलर ज्योति शिपणकर के अनुसार, टीबी का इलाज है जबकि

"According to a study conducted by an NGO, INP-PLUS, 1/3rd of the TB infected patients are paying for their own anti-TB drugs and are unaware that the government is providing free treatment for the same. This study has investigated the various causes of delay in treatment of the disease. This study has also gathered in-depth information about the patient and the provider of anti-TB drugs. 10 % of the patients participating in the study admitted that they had discontinued treatment within 10 days of start of the program. This has several serious personal and social implications".

10 Years REACH in the fight against TB

SPEAK UP TO STOP TB

THE Lilly MDR-TB PARTNERSHIP